अजायब बानी

मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2023

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Dec. 2023, Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Dec. 2023

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–आठवां	दिसम्बर–2023

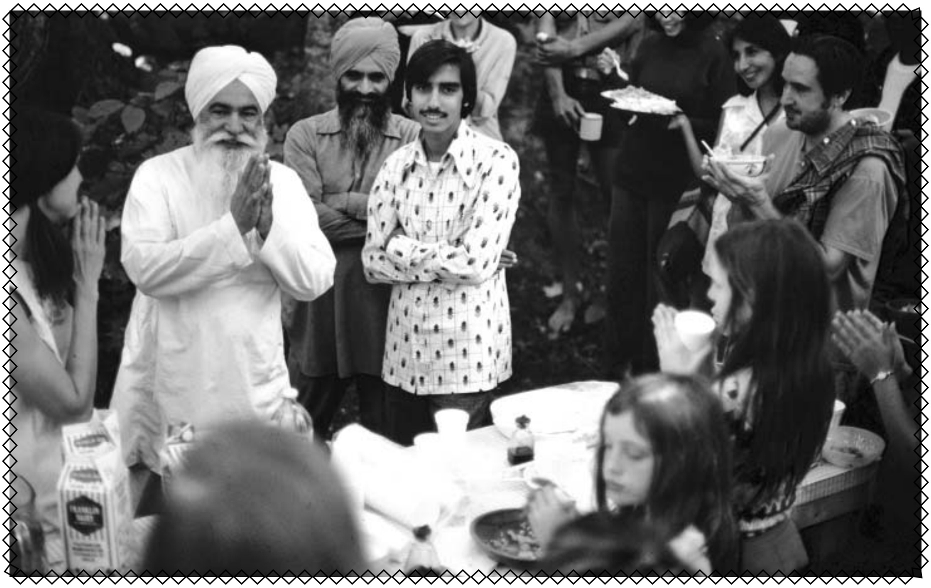

5 नाम की महिमा अपरम्पार है

29 परमात्मा एक रोशनी है

34 भजन–अभ्यास

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 261 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

नाम की महिमा अपरम्पार

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, x 2

1 *पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,*
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश, x 2
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा .....

2 *नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,*
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, x 2
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा .....

3 *प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,*
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया x 2
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा .....

4 *नाम की महिमा नाम जी जाने, यां जिस नाम ध्याया,*
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि–कोटि यश गाया x 2
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज DVD 265

नाम की महिमा अपरम्पार है

10 मार्च 1994, जयपुर गुरु अमर देव जी की बानी

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर बड़ी दया की, तपते दिलों को नाम का अमृत पिलाकर आत्मा को शांति दी। गुरु साहब उस शान्ति का जिक्र करते हैंः

चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घाँम।
सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु।।

मान लिया कि चंद्रमा की रात ठंडी, शोभायमान, प्रकाश वाली होती है, दिल को सरूर आता है और चंदन भी बहुत ठंडा होता है। सर्प अपनी जहर को कम करने के लिए चंदन के साथ लपेटे मारकर पड़े रहते हैं कि हमें यहाँ शांति मिले। ये सब चीजें अपनी–अपनी जगह ठंडी है। गुरु साहब ने जिस चीज़ का जिक्र किया है जो आत्मा को शांति देती है वह नाम है। सर्प को चंदन के साथ लिपट कर जो शान्ति आती है वह आर्जी है क्योंकि सर्प के अंदर का जहर और गुस्सा चंदन के साथ लिपट कर दूर नहीं होता। इसी तरह चंद्रमा की रात ठंडी और शोभायमान है लेकिन वह रात भी बीत जाती है।

सन्त हमें बताते हैं कि नाम को अग्नि जला नहीं सकती। चोर चुरा नहीं सकता। पानी डूबो नहीं सकता और ठग कोई ठगी नहीं मार सकता। नाम में शान्ति है, नाम में ठंडक है, नाम में प्रकाश है, नाम में सदा का जीवन है और **नाम की महिमा अपरम्पार है।**

कुल मालिक दयालु कृपाल ने हमारे ऊपर नाम की बारिश की, जिसे हम धन–दौलत से, जोर–जबरदस्ती से, कोई वेश धारण करके या घर–बार छोड़कर प्राप्त नहीं कर सकते थे। यह उनका रहम था, दया

थी कि उन्होंने अपना घर–बार छोड़ा, अपना आराम छोड़ा, परमात्मा के साथ अपना मिलाप छोड़ा बेशक वे देह धारण करके भी जुड़े रहते हैं। सन्तों की साधना तेल की धार जैसी होती है जो टूटती नहीं, वे अंदर से और बाहर से परमात्मा के साथ जुड़े रहते हैं। सन्त हमें शीतल और शांति वाले नाम के साथ जोड़ने की खातिर मल–मूत्र और बीमारियों का चोला धारण करते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी हिस्ट्री में लिखते हैं कि जो हिरण एक बार पैर पकड़ने वाले फंदे को तोड़ देता है वह फिर उसमें अपनी टांग नहीं फँसाता। उसे उस दर्द और उस कैद का पता है। अगर किसी को स्वर्ग की सैर करने को मिले तो वह बंजर में जाकर मिट्टी नहीं उड़ाता। अगर किसी को अमृत पीने को मिले तो वह हथेली पर रखकर कभी भी जहर नहीं खाता। अगर प्यारे के साथ मिलाप हो जाए तो ऐसा कौन है जो बिछोड़े को गले लगाएगा?

ये सब सहूलतें दयालु गुरुदेव के पास थी लेकिन वे हमारी आत्मा का कष्ट सहन नहीं कर सके उन्होंने अपना शांति का देश छोड़कर यहां दुखों से भरी दुनिया में आकर हमें नाम के साथ जोड़ा, अपने घर का निमंत्रण दिया।

आपके आगे गुरु अमर देव जी महाराज का छोटा–सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनें। हमें जब तक किसी सन्त–महात्मा से 'सुरत–शब्द' का अभ्यास और साधन न मिले, हम उसकी साधना करके अंदर न पहुँच जाएं, तब तक चाहे हम दिन–रात तोते की तरह जितनी मर्जी महात्माओं की बानियां पढ़ लें, हमें समझ नहीं आती कि बानी में उन महात्माओं ने क्या लिखा है और हमारे अंदर क्या गलती है? सन्तों की थ्योरी नेचुरल है, वह किताबों में नहीं। किताबें उसकी जानकारी देती

हैं, उसके मिलने के फायदे बताती हैं। धर्म ग्रंथ हमें यह भी बताते हैं कि परमात्मा दरवाजे पर बहुत सख्त ताला लगाकर हमारे अंदर बैठ गया है। हम जब तक किसी कुंजी वाले महात्मा के पास नहीं जाएंगे और महात्मा चाबी नहीं लगाऐंगे तब तक हमारा ताला नहीं खुलेगा। पढ़ने-पढ़ाने के लिए तो गुरु नानक देव जी कहते हैं:

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास।
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास।
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख।।

चाहे सारे साल, सारे महीने, सारे दिन, सारी जिंदगी पढ़ लें और पढ़-पढ़कर चूर भी क्यों ना हो जाएं लेकिन लेखे में आने वाली एक ही बात है अगर सुरत, शब्द के साथ लग गई तो बेड़ा पार है नहीं तो अपना वक्त खराब करने वाली बात है। गुरु साहब तो यहां तक कहते हैं:

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ।
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।।

सन्त पढ़ने-पढ़ाने को बुरा नहीं कहते लेकिन वे कहते हैं कि आप सोच-समझ कर पढ़ें कि हम क्या पढ़ रहे हैं और हममें क्या कमी है?

सतगुरु महाराज कृपाल से सवाल किया गया कि हम लोग रामायण के सप्ताह करते हैं या श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अखंड पाठ करते हैं, इनका कोई फायदा है? महाराज जी ने कहा, ''हां, बहुत फायदा है अगर सोच-समझकर किया जाए, एक शब्द भी पढ़ लें तो उसका फायदा है। हमें बानी जहां लेकर जाती है अगर वहां चल पड़े तो एक शब्द में ही सारा राज़, सारी मेहनत समझ आ जाती है।''

आमतौर पर सन्तों की बानी में तीन चीजें दर्ज होती हैं-सतसंग, नाम और सतगुरु की महिमा। बाकी समझाने के लिए उसमें उदाहरण

होते हैं। सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता, सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती और हमें हमारी गलतियों का पता नहीं लगता।

नाम के बिना मुक्ति नहीं अगर हम सन्तों की बानी के मुताबिक किसी जीवित महापुरुष जलते हुए दीपक के पास बैठने लग जाएँ तो हमारा बुझा हुआ दीपक भी जल पड़ता है। अगर हमने नाम प्राप्त कर लिया तो हम अपने मकसद में पूरे हो जाते हैं। अगर हम ये चीजें नहीं करते तो बानी पढ़ने वाले, पढ़ाने वाले और सुनने वाले के पल्ले कुछ नहीं पड़ता। सुनने वाले ने अमल ही नहीं किया तो वह धोती झाड़कर घर की ओर चल देता है। अगर तीनों में से किसी ने भी अमल कर लिया तो पढ़ने वाला, पढ़ाने वाला और सुनने वाला भी तर जाता है।

बहुत से भाई जिन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के काफी पाठ किए होते हैं वे जब हमारे पास आते हैं तो उनसे प्यार से पूछते हैं, ''क्यों भाई प्यारेयो, श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमें प्यार से समझाता है कि आपके अंदर प्रकाश है, उसमें बानी है अगर आप उस प्रकाश में जाएँ, उस बानी को पकड़ें तो आपकी लिव परमात्मा के साथ लग सकती है।'' लेकिन उनके पास कोई जवाब नहीं होता, वे कहते हैं कि हम पढ़ते तो हैं जब ऐसी तुकें आती हैं तो हमारे दिल को भी ठेस लगती है। उन्हें कुछ दिन सतसंग सुनने की सलाह दी जाती है। वे जब सतसंग सुनते हैं तो उनका भाग्य बन जाता है, वे भी नाम लेकर अपने जीवन को पवित्र कर लेते हैं।

जब तक हमें किसी महात्मा से 'सुरत-शब्द' का साधन नहीं मिलता तब तक हमें किसी महात्मा की बानी की समझ ही नहीं आती कि वह बानी हमें क्या कह रही है।

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी।। बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी।।

जीवों के लिहाज से चार क्लासें हैं, चार खाणियां और चार बाणियां हैं। **एक**–जो अंडों से पैदा होते हैं जिसमें पक्षी आते हैं, उन्हें अण्डज कहते हैं। **दूसरा**–जेरज जो झिल्ली से लिपटे पैदा होते हैं, इनमें इंसान और चार पैरों वाले जानवर आ जाते हैं। **तीसरा**–सेतज जो मौसम की तब्दीली से पैदा होते हैं। **चौथा**–उतभुज जमीन से जो वनस्पति वगैरह उगती है। ये जड़ चीजें हैं इन्हें नाम की खबर नहीं।

इसी तरह चार बाणियां हैं **एक**–परा। **दूसरा**–पश्यन्ती। **तीसरा**–मध्यमा और **चौथा**–वैखरी। एक वह है जो हम जुबान से एक दूसरे को बोलकर समझाते हैं जिसमें हमारे सारे वेद शास्त्र आ जाते हैं। एक नाभि के बीच से योगी जन झोंका उठाते हैं जिसे मध्यमा कहते हैं। इन चारों बाणियों को भी नाम की खबर नहीं।

यह नाम हिंदी, पंजाबी और किसी भी भाषा में नहीं लिखा जाता। सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि ये सारे नाम वर्णनात्मक हैं और वह नाम धुनात्मक है। वह नाम बिना लिखी और बिना बोली भाषा है। वह ताकत है, जिसने कुल दुनिया की रचना पैदा की है। वह न लिखने में आती है, न बोलने में आती है। चारों वेद शास्त्र लिखने, पढ़ने और बोलने में आ जाते हैं। कबीर साहब जी कहते हैं:

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै।।

महात्मा कभी भी किसी वेद–शास्त्र की निंदा नहीं करते, न ही वे हमें निंदा करने की इजाजत देते हैं वे कहते हैं, ''उन वेद–शास्त्रों की क्या गलती है, गलती तो हमारी है जो हम पढ़कर उनके पीछे नहीं चलते, उन पर विचार नहीं करते।'' गुरु साहब हमें प्यार से कहते हैं:

पड़ि पड़ि थाके साँति न आई।
बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे।।

परमात्मा अपने मिलने का जो चाहे तरीका रख सकता था, वह खुद मालिक था। उन्होंने कुदरती कानून ही बना दिया कि आप पढ़कर चाहे थक भी क्यों ना जाएँ फिर भी मन को शांति नहीं आएगी। गुरु के बगैर नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं, **नाम की महिमा अपरम्पार है।** सन्त जिसे ज्ञान कहते हैं, वह पढ़ने, लिखने और बोलने में नहीं आता। आमतौर पर हम ज्ञान उसे कहते हैं जो ज्यादा पढ़ जाए और बहस में एक दूसरे को हरा ले। हम कहते हैं कि यह बहुत पढ़ा–लिखा है, इसने उसे बोलने नहीं दिया। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

लिखि लिखि पड़िआ, तेता कड़िआ,बहु तीरथ भविआ, तेतो लविआ।
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ, सहु वे जीआ अपणा कीआ।
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ,बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ।।

बाहर हम जितना पढ़ लेते हैं या बाहरमुखी क्रिया करते हैं, उससे हमें बहस करने की आदत पड़ जाती है। कबीर साहब के वक्त का वाक्या है कि एक सरबाजीत पंडित था। उसने काशी यूनिवर्सिटी के लोगों को और दूर–नज़दीक संसार में जो भी उसे पढ़ा–लिखा दिखता वह उससे बहस करने के लिए जाता और उसे हरा देता था।

पहले उसका नाम सरबानंद था, उसने अपना नाम बदलकर सरबाजीत रख लिया कि मैं सबको जीत लेता हूँ। उसकी माता काशी गई हुई थी, वहां उसे कबीर साहब की संगत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने कबीर साहब से नामदान प्राप्त कर लिया। जब कमाई की तो उसे समझ आई कि मेरा लड़का अच्छी करनी नहीं कर रहा। वह अपने लड़के की बेवकूफी पर परेशान हुई कि वह लोगों के साथ बहस करने में अपना वक्त क्यों खराब कर रहा है।

माता उसे समझाती लेकिन लड़का बहस करता था। माता कहती कि मैं तुझे तभी सरबाजीत कहूँगी अगर तू कबीर साहब को हराकर

आए। सरबाजीत बैलगाड़ी पर किताबें लादकर चल पड़ा। जब वह काशी में कबीर साहब के घर गया तो वहां उसे कमाली मिली। उससे पूछा, ''क्या कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहा:

कबीर का घर शिखर पर, यहाँ सिलहली गैल।
पाँव न टिके पपील का, पंडित लादे बैल।।

कबीर का घर सच्चखंड में है। वहां ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पहुँच नहीं है। वहाँ रूहानी चढ़ाई है। इतनी तीखी और ऊँची चढ़ाई है कि वहां तो चींटी का पाँव नहीं टिकता और तू किताबों की बैलगाड़ी लादकर लाया है, तू ये वहां किस तरह लेकर जाएगा? जब बात हो रही थी तब कबीर साहब भी आ गए। सरबाजीत ने कहा, ''मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करने आया हूँ, आप अपनी तैयारी कर लें।''

कबीर साहब ने हँसकर कहा, ''देख भाई प्यारेया, मेरी कौन-सी तैयारी है, मैंने तो इतनी किताबें कभी देखी भी नहीं जितनी तू लिए फिर रहा है।'' सरबाजीत ने कहा, ''फिर आप लिख दें कि कबीर साहब हार गए हैं और सरबाजीत जीत गया है।'' कबीर साहब ने कहा, ''मैं लिखना भी नहीं जानता। तू लिख ले, मैं हस्ताक्षर कर देता हूं, जैसे तेरी मौज है।'' उसने लिख लिया कि कबीर साहब ने हार मान ली है और सरबाजीत जीत गया है।

जब घर आकर माता को दिखाने लगा कि यह देख, मैं तेरे गुरु को जीत कर आ गया हूँ लेकिन वहां उल्टा लिखा हुआ था कि सरबाजीत हार गया है और कबीर साहब जीत गए हैं। वह परेशान होकर दोबारा कबीर साहब के पास गया और कहने लगा, ''यह ठीक नहीं लिखा था।'' कबीर साहब ने कहा, ''तू अब लिख ले, मैं फिर उसी तरह हस्ताक्षर कर दूंगा।'' कबीर साहब ने फिर हस्ताक्षर कर दिए।

जब घर जाकर माता को दिखाने लगा तो वह लिखित फिर उल्टी हुई थी कि सरबाजीत हार गया है और कबीर साहब जीत गए हैं। अहंकारी आदमी यह मान कर चलता है कि मेरे जैसा कौन है? मैं जो कहता हूं वह ठीक है इसलिए वह माता से कहने लगा, ''देख, कबीर साहब जादूगर हैं, मेरा लिखा हुआ जादू के जरिए पलट देते हैं।''

उसकी माता ने कहा कि बेटे, वे जादूगर नहीं। सच्चाई के आगे झूठ नहीं टिकता। जब तू कबीर साहब के पास जाता है, तेरे ख्याल, तेरे हाथ जो लिखना चाहते हैं, जो तू अंदर सोचता है वह नहीं हो रहा बल्कि उसके उल्ट हो रहा है। अगर तू कबीर साहब को हराना चाहता है तो तू नाम लेकर कमाई करके कबीर साहब के घर सच्चखंड पहुंच। अगर तू वहाँ जाकर उतनी नम्रता रखेगा तो कबीर साहब को जीत सकता है। कुल मालिक होकर भी कबीर साहब के अंदर कितनी नम्रता है कि भई, मैं तो तेरे आगे हार मानता हूं। इसलिए गुरु साहब कहते हैं:

आपस कउ जो जाणै नीचा, सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा।।

वह ऊँचा है जिसके अंदर सारे गुण मौजूद हों फिर भी वह अपने आप को नीचा समझे। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत।।

जिनके अंदर न तो कोई गुण है, न उनकी वहां तक रसाई है, वे ऐसे ही अहंकार करते फिरते हैं, हौमें में सड़ रहे हैं। ये जितनी खाणियां और बाणियां हैं, नाम के बिना भ्रम में हैं। हम जो कुछ भी आंखों से बाहर देखते हैं, यह सब भ्रम है। सच एक परमात्मा है।

गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ।।

गुरु अमर देव जी, गुरु अंगद देव जी की बड़ाई करते हैं अगर सेवा और कुर्बानी के बिना नाम मिलता होता तो बुढ़ापे में गुरु अमर देव जी

महाराज गुरु अंगद देव जी की कठिन सेवा न करते। आपने बड़ी कठिन सेवा की, एक मिसाल बनकर दिखाया है। आप कहते हैं कि उन्होंने दया–मेहर करके हमें नाम के साथ जोड़ दिया, अब हम जन्म–मरण से मुक्त हैं, हम उस जगह पहुंच गए हैं जहां मौत और पैदाइश नहीं है।

हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ।।

मैं अपने गुरु पर बलिहार जाता हूं, कुर्बान जाता हूं जिन्होंने मेरा ख्याल इंद्रियों के भोगों में से निकालकर 'शब्द' और परमात्मा के साथ जोड़ दिया। सहजो बाई प्यार से कहती है:

गुरु का बदला दिया ना जाई, सर्बस वारे सहजोबाई।

चाहे मैं अपना सरवंश भी गुरु के ऊपर न्यौछावर क्यों न कर दूं फिर भी मैं गुरु का कर्ज नहीं चुका सकती। जिन महात्माओं की आंखें खुल जाती हैं, जो अंदर जाते हैं उन्हें पता चलता है कि गुरु किस देश से आते हैं और गुरु की क्या पोजिशन है।

मैं बताया करता हूं कि सन्त–सतगुरु जब संसार में आते हैं पहले तो वे हमारे सामने एक छोटा–सा जीवन व्यतीत करते हैं, हमारे सवालों का जवाब देते हैं। हमें प्यार से समझाकर नाम के साथ जोड़ते हैं, हमारे अंदर नाम जपने का शौक़, विरह, तड़प पैदा करते हैं। जब हम उनकी बताई हुई युक्ति के मुताबिक फैले ख्याल को सिमरन के जरिए आंखों के पीछे लाकर एकाग्र करते हैं, वहां सन्त सूक्ष्म रूप में प्रकट हो जाते हैं। अगर हम कारन में जाते हैं तो वे कारन रूप में प्रकट हो जाते हैं। अगर हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुंच जाते हैं तो वहां शब्द है। इसी तरह जब हम और ऊपर जाते हैं, वहां सार–शब्द, प्योर–शब्द है जिसे कबीर साहब कहते हैं:

राम संत महि भेदु किछु नाही।

राम और सन्त को हम अलग–अलग ब्यान करते हैं। जड़ एक ही है सिर्फ शाखाएं दो हैं। कबीर साहब कहते हैं:

राम कबीरा एक हैं, कहन सुनन को दोए।

कहने और सुनने के लिए ही दो है। हम उतना वक्त ही कहते हैं जितना वक्त हमें गुरु नहीं मिलते, नाम नहीं मिलता। जब नाम मिल जाता है फिर पता चलता है कि गुरु किस मुल्क से आते हैं, उनका क्या मिशन होता है। हमारे अंदर सच्चा प्यार, सच्ची इज्जत उसी वक्त जागती है जब हमें पता चलता है कि गुरु एक छुपे हुए तत्व हैं।

हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ।।

वह परमात्मा सच्चा है, जन्म–मरण के दुखों से ऊपर है लेकिन हम उसे गुरु की भक्ति, गुरु के बताए हुए सिमरन के साथ ही पा सकते हैं।

सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए।।
जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए।।

अब गुरु अमर देव जी महाराज कहते हैं कि सतगुरु शीशा हैं, शीशे के अंदर हम अपना चेहरा देखते हैं। हमारी किरणें शीशे से टकराकर हमें दिखाई देती हैं अगर हम हंसते हैं तो हंसता हुआ देख लेते हैं, अगर रोते हैं तो रोता हुआ देख लेते हैं, अगर चेहरे पर कोई दाग है तो वह भी हमें साफ दिखाई देता है। अब शीशे का तो कोई कसूर नहीं जैसी हमारी शक्ल बनी है वैसी ही दिखाई देती है। इसी तरह **सन्त साफ शीशे की तरह प्योर, पवित्र और निर्मल होते हैं जो उनके साथ लगते हैं वे भी निर्मल, प्योर और पवित्र हो जाते हैं। हम जैसी भावना लेकर जाते हैं वे हमें वैसे ही नजर आते हैं।** सन्त कहते हैं:

जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभ मूरति तिन्ह देखी तैसी।।

जब हमारा ख्याल मैला है तो वे हमें परमात्मा के रूप में कैसे नजर आ सकते हैं? जैसे हमारे ख्याल हैं वे हमें वैसे ही नजर आते हैं। वे तो सुच्चे बर्तन हैं, शीशे की तरह साफ, पवित्र और प्योर हैं लेकिन कसूर हमारी भावना, हमारी समझ या हमारी श्रद्धा का होता है। जिसकी जैसी भावना है, वह वैसा ही फल प्राप्त करता है।

सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ।।

ऊँचे भाग्य हों तो हमारा मिलाप ऐसे महात्मा के साथ होता है और नाम मिलता है अगर उससे भी ऊँचे भाग्य हों तो हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह और तड़प पैदा होती है। वे तो सारी वस्तुओं के दाता हैं, देने को तैयार हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

देदा दे लैदे थकि पाहि, जुगा जुगंतरि खाही खाहि।।

हम युगों-युगों से लेते हुए थक गए हैं, वह देते-देते नहीं थका। पिछले जन्मों में हमने जो मांगे मांगी थी, वह आज मालिक ने दे दी हैं लेकिन आज हम भोगते वक्त दुखी हैं। किसी को कर्जा देने का दुख है किसी को कर्जा लेने का दुख है। कोई बीमारी से दुखी है, कोई बेरोजगारी से दुखी है। किसी के बच्चा नहीं वह तड़प रहा है अगर किसी के है और वह बच्चा नालायक निकल गया तो वह तड़प रहा है। अगर परमात्मा वापिस बुला लेता है तो न हमें दिन में चैन है न रात में चैन है।

पति साथ छोड़ जाता है तो पत्नी बिलखती फिरती है। पत्नी साथ छोड़ जाती है तो पति बिलखता फिरता है। आप इस दुनिया में किसी तरफ भी निगाह मारकर देख लें, दुख ही दुख हैं, मुसीबतें ही मुसीबतें हैं। कबीर साहब कहते हैं:

देह धर सुखिया कोई ना देखया, जो देखया सो दुखिया है।
उदय अस्त की बात कहे तूं, सबका लिया विवेका है।।

देह धारण करके कोई सुखी नजर नहीं आया अगर किसी को थोड़े–बहुत आर्जी सुख नजर आते भी हैं तो उसे उन सुखों को खोने का डर लगा हुआ है कि पता नहीं हम किस समय इन सुखों को खो देंगे। एक दूसरे का पर्दा ही होता है कि शायद यह चिकना–चुपड़ा है, बड़े अच्छे कपड़े पहने हुए हैं यह तो सुखी होगा। आप उसे एक तरफ करके पूछें कि वह कितना दुखी है? ऐसा लगता है कि इसके जितने दुख किसको हैं, वह फोड़े की तरह भरा बैठा होता है।

प्रेमियों के पत्रों से भी पता चलता है, जब दर्शनों में मिलते हैं उस वक्त भी पता चलता है कि दुनिया दुख–तकलीफों में घिरी हुई है। बहुत सारे प्रेमी पत्रों में लिख देते हैं कि मेरा जीने को दिल नहीं करता, मेरा दिल करता है कि मैं जल्दी संसार छोड़ जाऊं। इंसान ऐसा उस समय सोचता है, जब वह अति दुखी होता है। सन्त प्यार से कहते हैं:

आत्मघाती सो महापापी।

आत्मघात करने वाले को न परमात्मा बक्शता है, न गुरु ही बक्शता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आत्मघात करने वाले को गुरु उल्टा लटका देते हैं। परमात्मा ने हमें जो साँस दिए हैं, उन साँसों को खुश होकर पूरा करने में ही फायदा है।

सन्त हमें निकालने के लिए आते हैं लेकिन हम यहां फँसने के लिए और माँग लेते हैं। पिछली मांगे भोगते–भोगते दुखी हुए बैठे हैं, अब जो मांग रहे हैं, यह भोगने के लिए फिर आ जाएंगे। वह देने वाला परमात्मा तो देते–देते नहीं थकता लेकिन हम लेते–लेते थक जाते हैं। सन्त–महात्मा प्यार से कहते हैं:

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख।
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख।।

हम दुनियादारों को मांगना भी नहीं आता अगर हम नाम मांगे तो हमें संतोष आएगा, शांति आएगी। जिसके पास संतोष का धन है उसके जैसा सुखी कौन है? महाराज जी कहा करते थे:

अध्धी रोटी खाए के, करे गुजारा नित।
अध्धी वंडदा फ़करां, जेहड़ा रब दा मित्त।।

महात्मा कहते हैं, ''बेशक तन पर कपड़ा नहीं है जिसके पास शांति, सब्र और संतोष है, वह अपने आपको शहंशाह समझता है।''

बिना संतोख नहीं कोऊ राजै।

अगर संतोष नहीं तो चाहे सारी दुनिया का धन-दौलत मिल जाए, हुकूमत भी मिल जाए फिर कौन-सा हम शांति प्राप्त कर लेते हैं। अगर राजा-महाराजाओं को शांति होती तो वे एक दूसरे के मुल्क पर क्यों चढ़ाइयाँ करते, क्यों दिन-रात ऐसा सोचते? आप भी आराम से बसते और दूसरों को भी आराम से बसने देते। अगर धन वालों को शांति होती तो वे दिन-रात भागते न फिरते। किसी को कितना भी धन क्यों न मिल जाए, वह धन के लिए और भागता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे परे को होड़े रे।

सतगुरु ऊंचे भाग्य वालों को मिलते हैं, वही ऊचें भाग्य वाले हैं जो उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर 'शब्द नाम' की कमाई करते हैं। अगर बच्चा बीमार है, कुछ खट्टा-मीठा मांगता है जिसका परहेज रखना जरूरी है तो माता उसे नहीं देगी। बच्चे को कोई फोड़ा है, माता उसका ऑपरेशन करवाती है। माता की उसके साथ दुश्मनी नहीं, वह बच्चे की बेहतरी के लिए कड़वी दवाई देती है।

आप प्यार से कहते हैं कि सन्त हमें इस संसार से, इन वस्तुओं से निकालने के लिए आते हैं लेकिन हम फिर इनमें फँसते हैं। वे हमें प्यार

से कहते हैं कि देख प्यारेया, यह तेरी प्रालब्ध है जो न घटे न बढ़े। पिछला कर्म भोगने के लिए हम मजबूर हैं, उन्हें प्यार से भोगें। आगे के कर्म बनाने के लिए आप स्वतंत्र हैं अगर हम गेहूँ बोएँगे तो गेहूँ काटेंगे, ईख बोएँगे तो मीठा फल खाएंगे, गुड़–शक्कर खाएंगे। इसी तरह जो मिर्च बोएगा वह मिर्च का फल ही खाएगा। हमने पीछे जो मिर्चें बोई हैं, वह हम खा रहे हैं। आगे के लिए तो हम अच्छा फल बोएँ, आगे के लिए तो 'शब्द–नाम' की कमाई करें ताकि हमें फिर इस दुनिया में न आना पड़े। सूफी सन्त फ़रीद साहब कहते हैं:

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआँ किकरि बीजै जटु।
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु।।

इहु मनु मैला इकु न धिआए।।
अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए।।

इस मन को जन्म–जन्मांतर की मैल लगी हुई है। एक ही परमात्मा है, उसकी भक्ति नहीं करता। कभी सरोवरों पर नहाता है, कभी तीर्थों पर जाता है, कभी पढ़–पढ़ाई में लग जाता है कि मेरी मैल उतर जाए। यह सब करने से मैल नहीं उतरती बल्कि अहंकार आ जाता है कि मैंने इतनी पढ़ाई कर ली है, मैंने इतने तीर्थ कर लिए हैं या मैंने इतना दान–पुण्य कर लिया है। महाराज जी कहा करते थे, ''अहंकार का आना ऐसा है जैसे हम अच्छा पुलाव बनाकर उस पर राख का धूड़ा दे दें।'' कबीर साहब कहते हैं:

किया कराया सब गया, जब आया अहंकार।

गुरु साहब कहते हैं:

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु।
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु।।

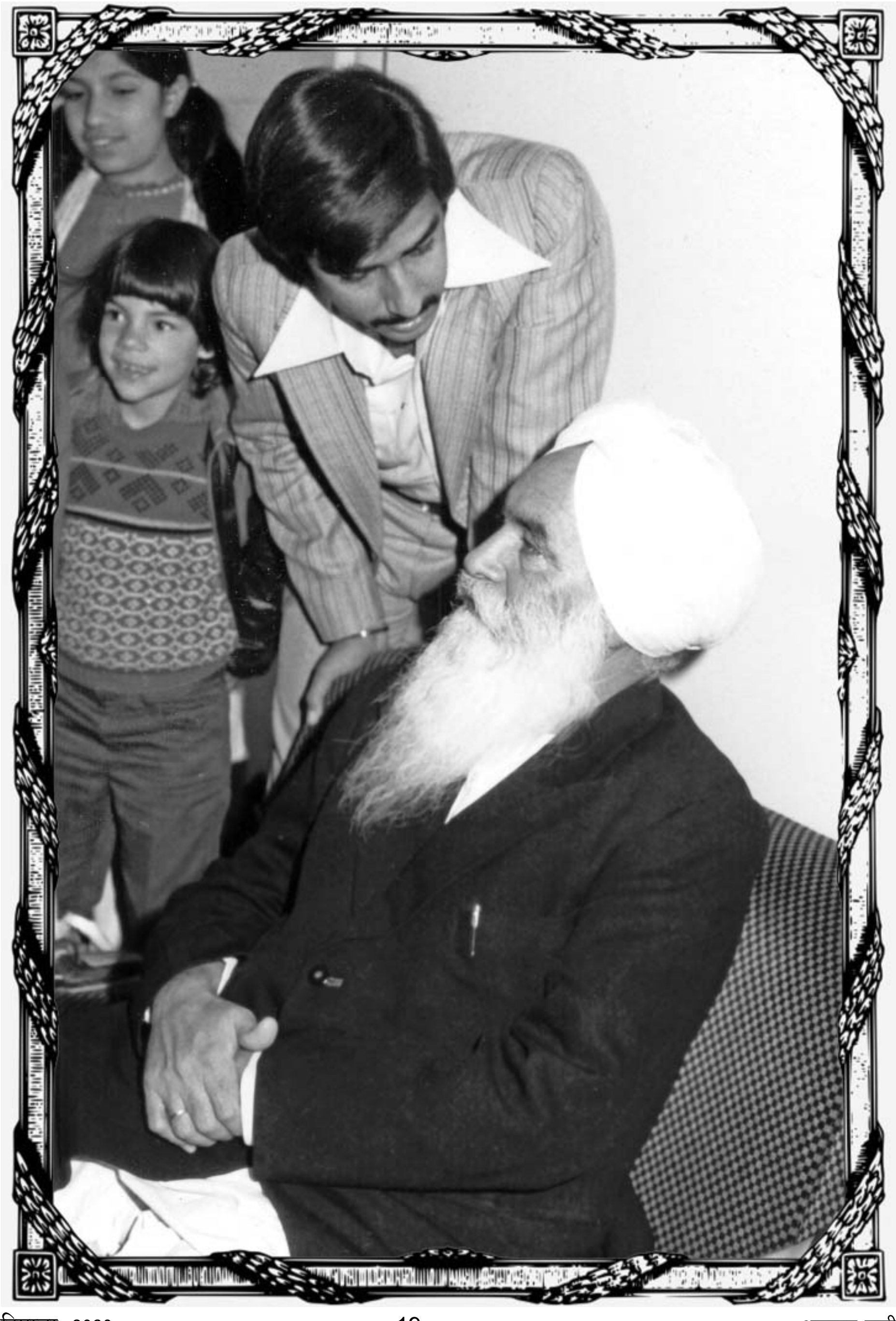

यह इस तरह है जैसे हाथी को स्नान करवाते हैं लेकिन वह फिर अपने ऊपर राख डाल लेता है। इसलिए महात्मा हमें प्यार से बताते हैं:

पाप करहि पंचाँ के बसि रे, तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे।
बहुरि कमावहि होइ निसंक, जम पुरि बाँधि खरे कालंक।।

हम काम, क्रोध, लोभ, मोह या अहंकार के कहने पर पाप करके अपनी आत्मा को मैला कर लेते हैं फिर उसे उतारने का तरीका है कि तीर्थों पर गए, पानी में डुबकी लगाई और यह कह दिया कि अब सब पाप उतर गए हैं। जब हम फिर गाँव में आते हैं तो हमारे अंदर वही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार है। इसलिए सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि मैल अंदर लगी हुई है लेकिन नहाने से जो उपाय करते हैं, वह उपाय बाहर-मुखी हैं। हमने कौन-से तीर्थ पर जाकर नहाना है? गुरु साहब उसे अमृतसर कहते हैं, कबीर साहब उसे मानसरोवर कहते हैं और ऋषि-मुनि उसी को प्रयागराज कहते हैं। बाहर जहां तीन नदियां इकट्ठी होती हैं, उसे प्रयाग कहते हैं लेकिन ये हमारे अंदर भी इकट्ठी होती हैं। बेणी साहब कहते हैं:

तीन नदी त्रिकुटी माहे।।
इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।।
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई।।

आप ब्रह्म में जाएं वहां ये तीनों नदियां इकट्ठी होती हैं, वहां प्रयागराज है। आप अंदर जाएँ उस प्रयागराज के दर्शन करें, उसमें स्नान करें। गुरु साहब कहते हैं:

एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई।।

सच्चे से सच्चा सरोवर आपका शरीर है, देह और वजूद है। आप इसमें दाखिल होकर स्नान करें। उस परमात्मा के शब्द की कमाई करके अंदर लिव लगाएँ। जब आत्मा से तीनों पर्दे उतर जाते हैं, पारब्रह्म में

पहुंच जाते हैं, जब सच्चे अमृतसर में स्नान करते हैं तब सारे पाप उतर जाते हैं। आत्मा को होश आती है कि मेरा भी कोई परमात्मा है। यहां आत्मा पर्दों में ढकी हुई है और वहां उसका प्रकाश बेशुमार है। आम शास्त्रों में आत्मा का प्रकाश बारह सूरज के बराबर बयान किया गया है।

महाराज जी मिसाल दिया करते थे कि एक लैंप जगता है अगर उस पर कई पर्दे चढ़ा दें तो लैंप जिस भी मकान में ले जाएंगे, वहां अंधेरा ही रहेगा। पर्दे उतारते जाएं मकान रोशनी से भर जाएगा। लैंप तो पहले से ही जग रहा था इसी तरह हमारी आत्मा पर पहले स्थूल पर्दा है जिसमें हम बैठे हैं, इसके अंदर सूक्ष्म है, उसके अंदर कारन है। इन्हें चाहे पिंजरे कह लें कि एक पिंजरे में दूसरा, दूसरे में तीसरा या तीन पर्दे कह लें। अगर युक्ति से इन्हें उतारना शुरू करेंगे तो हमारे अंदर आत्मा रूपी लैम्प तो जग रहा है, हमारे शरीर रूपी मकान में प्रकाश हो जाएगा।

जहां प्रकाश है वहां हम हर वस्तु को बड़े प्यार से साफ देख सकते हैं। हम मुंह में निवाला डालते हैं, हमें पता नहीं कि वह दाऐं जाता है या बाऐं जाता है, हमारे शरीर में कितनी नाड़ियां हैं? शास्त्रों में पढ़कर हम गिनती जरूर कर लेते हैं कि इतनी नाड़ियां हैं, इस साइड खाना जाता है, इस साइड पानी जाता है। यह सिर्फ किताबी ज्ञान है लेकिन खुद तो देखी नहीं। सन्तों को शरीर के अंदर के बारे में पूरा ज्ञान होता है, वे अंदर जाते हैं और देखते हैं कि कुदरत ने क्या नजारा बनाया है।

तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ।।
सतिगुरु सेवे ता मलु जाए, जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए।।

कोई महात्मा मिले तो वह हमें अंदर जाने का साधन और तरीका बताए। फैले ख्याल को नौ द्वारों में से निकालकर आंखों के पीछे आएं। हमें पता है कि जब मौत आती है तो आत्मा शरीर के अंदर दोबारा प्रवेश

नहीं करती। सन्त जिसे जीते जी मरने की क्रिया कहते हैं वह क्रिया सिमरन के जरिए फैले ख्याल को मन इंद्रियों से ऊपर ले जाना है। जब हम इस जगह पहुंचते हैं तो शरीर में से पूरी चेतन सतह सिमट जाती है। शरीर की कोई हानि नहीं होती, यह इस तरह से होता है जैसे कोई पराया शरीर पड़ा होता है बल्कि जब हम अंदर जाकर बाहर आते हैं तो ताजगी मिलती है। बुल्लेशाह ने कहा था:

नित नित मरां ते नित नित जीवां, मेरा नित–नित कूच मुकाम।।

यह नित्य का जीना–मरना है। कोई महात्मा मिले जो हमें बताएं कि जीते–जी कैसे मरना है, कैसे मर कर फिर जीना है। गुरु साहब कहते हैं:

सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई।।
पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई।।
बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाइ।।

परमात्मा को यही पूजा परवान है। नाम के बिना और कोई पूजा ही नहीं है। पाप उतारने की दवाई 'शब्द–नाम' की कमाई है।

हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ।।

परमात्मा निर्मल है, शब्द निर्मल है जो उसके साथ जुड़ जाते हैं, वे भी निर्मल हो जाते हैं, प्योर और पवित्र हो जाते हैं।

बाझु गुरु है अंध गुबारा, अगिआनी अंधा अंधु अंधारा।।

अब गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि जब तक गुरु नहीं मिलते, हमारे अंदर से अज्ञानता का अंधेरा दूर नहीं होता। गुरु लफ्ज बहुत ही प्यारा और मीठा है। आम भाषा में कोई उस्ताद, टीचर या आचार्य कहते हैं। आजकल आमतौर पर लोग उसे अध्यक्ष या चेयरमैन कह देते हैं। पूर्वी भाषा में गुरु लफ्ज बहुत प्यारा है। हिन्दू शास्त्रों में गुरु का अर्थ 'गु' का मतलब 'अंधेरा' है और 'रू' का मतलब 'प्रकाश' है। जो अंधेरे में

प्रकाश करे। प्रकाश अंधेरे से नहीं डरता अगर वह डरता है तो प्रकाश किस बात का हुआ? उसे पता है कि जब अंधेरा मेरे पास आएगा तो मैं इसे अपने अंदर समा लूंगा और प्रकाश कर दूंगा।

सन्त यह नहीं कहते कि हमारे पास पुन्नी ही आएं, कोई पापी न आए बल्कि सच्चाई तो यह है कि इनकी हस्ती संसार में आती ही पापियों के लिए है। वे बक्शने के लिए ही आते हैं। उनके पास अच्छी आत्माएं भी आती हैं और भटकी हुई आत्माएं भी आती हैं। उन्हें अपने करतब पर मान होता है, नाम मैला नहीं होता जिसके अंदर नाम रखेंगे वह जैसे–जैसे कमाई करेगा वैसे–वैसे साफ, प्योर और पवित्र हो जाएगा।

महात्मा की संगत में आकर बड़े–बड़े चोर–डाकू और राक्षस अच्छे इंसान बन जाते हैं, देवता बन जाते हैं। कसाई लोग कसाई का काम छोड़कर चने बेचने लग जाते हैं और बड़े प्यार से अपनी मेहनत की रोज़ी–रोटी कमाते हैं। यह हम सुनी–सुनाई बातें नहीं कर रहे, हमारी आंखों देखी बातें हैं। यह संगत का फल है। यह प्रकाश का फर्क है कि अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है।

बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ।।

गंदगी का कीड़ा गंदगी में ही खुश रहता है अगर हम उसे बाहर निकालकर बाग की खुशबू देना चाहें तो वह तड़पकर उसी वक्त मर जाएगा। शेख सादी लिखते हैं कि एक चमड़े का काम करने वाला इत्र वालों के मोहल्ले में चला गया। जब उसे इत्र की खुशबू आई तो वह बाजार में बेहोश होकर गिर गया। आपको पता ही है अगर चलता–फिरता इंसान बाजार में गिर जाए तो सबको अचंभा हो जाता है कि क्या हो गया। वहां बहुत लोग इकट्ठे हो गए। कोई उस आदमी को जानता था, वह चमड़े का काम करने वालों के मोहल्ले की तरफ भागा कि आपका

आदमी बाजार में बेहोश गिरा पड़ा है, आप उसे ले आओ। उस मोहल्ले का आदमी जानता था कि हमारे लोग इत्र की खुशबू सहन नहीं कर सकते। उस आदमी ने थोड़ी सी गंदगी उठाई और वहाँ जाकर लोगों से कहा कि आप लोग इसके आस-पास क्यों खड़े हैं? सब दूर हो जाएं, मैं अभी इसे ठीक कर देता हूं। बस! वह गंदगी नाक के नजदीक करने की जरूरत थी, जब बदबू आई तो वह मौज से उठकर खड़ा हो गया।

हमारी भी यही हालत है, हमें विषय-विकारों की गंदगी की और जन्म-मरण की बदबू चढ़ी हुई है। हम इसी में ही खुश रहते हैं हम मुड़-मुड़ कर फिर उधर जाते हैं। महात्मा आकर दया करके हमें उस विषय-विकारों की गंदगी से उठाकर महात्मा बनाना चाहते हैं लेकिन हम फिर उसी तरफ जाते हैं, खुश्क होकर फिर विषय-विकारों में लिपटते हैं।

मुकते सेवे मुकता होवै, हउमै ममता सबदे खोवै।।
अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ।।
आपे बखसे मेलि मिलाए, पूरे गुर ते नामु निधि पाए।।

परमात्मा ने हर एक की मौत-पैदाइश और जीवन-मरण अपने हाथ में रखा हुआ है। वह जिसे बक्शना चाहता है, चौरासी में से निकालना चाहता है, अपने पास बुलाना चाहता है, अंदर से उसकी चाबी मरोड़ कर किसी महात्मा की संगत और सोहबत में ले आता है। वह जिस रास्ते से भटका होता है, महात्मा उसे फिर उसी रास्ते पर डाल देते हैं। अगर परमात्मा दया-मेहर न करें चाहे महात्मा हमारे पड़ोस में रहने लग जाएँ, चाहे घर में ही पैदा क्यों न हो जाएँ लेकिन हमें समझ नहीं आती कि यह महात्मा हैं या हमारी तरह दुनियादार है?

गुरु नानक देव जी महाराज का इतिहास पढ़ लें, अगर उनके माता-पिता उन्हें पहचान लेते तो वे उन्हें थप्पड़ मार-मार कर उनके

गाल लाल न करते। वे कभी किसी की मिन्नतें करते कि इसे काम पर लगाओ, यह खाली रहता है। अगर उन्हें यह पता होता कि यह कुल मालिक परमात्मा है, सब कुछ करन–कारन हैं तो वे उनसे फायदा उठाते। आखिर बुढ़ापे में गुरु नानक देव जी की माता जी उनसे कहने लगी, ''हम तेरी लीला को बचपन से देखते आ रहे हैं लेकिन हम समझ नहीं पाए, तू ही हमें समझा सकता है।'' गुरु नानक देव जी ने कहा:

आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि।।

नाम कहना भी मुश्किल है और नाम की महिमा सुननी भी मुश्किल है। परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है कि किसे मिलाना है और मैंने किसे दर से दूर करना है।

भाग हीन गुरु ना मिले, निकट बैठया नित पास।।

अगर आपके भाग्य में न हो तो चाहे आप महात्मा के पास रहने लग जाएं, आपको समझ ही नहीं आएगी कि महात्मा क्या कहते हैं।

सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ।।
सदा हजूरि दूरि न जाणहु, गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु।
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''हमारा जन्म–मरण, मिलाप या बिछोड़ा परमात्मा के हाथ में है, परमात्मा जिसे चाहे अपने से मिलाए जिसे चाहे अपने से दूर रखे। कहीं दिल में ख्याल हो कि वह पहाड़ों पर बैठा है या समुंद्र की गहराई में बैठा है या किसी खास स्वर्ण–मंदिर या स्वर्ण–मस्जिद में बैठा है, यह हमारी भूल है।''

सदा हजूरि दूरि न जाणहु।।

परमात्मा तो नज़दीक से नज़दीक आपके अंदर आपकी इंतजार में बैठा है। जो चीज हमारे अंदर है उसे हम अंदर ढूंढेंगे तभी हम उसे प्राप्त

कर सकते हैं। अब वस्तु तो हमारे घर में है, हम उसकी खोज बाहर जाकर करें तो उसे कैसे हासिल कर सकते हैं? कबीर साहब कहते हैं:

बस्तु कहीं ढूंढै कहीं, केहि बिधि आवै हाथ।
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ।।

वस्तु हमारे अंदर है, हम उसकी खोज जंगलों–पहाड़ों में या किसी और जगह करते हैं। अगर हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो सबसे पहले उस भेदी के पास जाएँ जिसने उसे प्राप्त किया है, अपने अंदर प्रकट किया है, अपने ऊपर खुश कर लिया है।

भेदी लीन्हा साथ कर, दीन्ही बस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुंचा जाय।।

भेदी आपसे यह नहीं कहेगा कि उस कब्र पर जाकर माथा टेक कर आएं, तब खुदा मिलेगा या उस दरिया में जाकर डुबकी लगाएं तब परमात्मा मिलेगा। भेदी कहेगा, ''परमात्मा तो आपके अंदर आपकी इंतजार में बैठा है।'' हम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि हमारा प्यारा जिससे हम बिछड़े हैं, जिसकी खातिर हम दिन–रात तड़प रहे हैं वह तो हमारे अंदर है। गुरु साहब कहते हैं:

अंदर करके फेर ना लब्भे।

जो अंदर है, उसकी हम बाहर जितनी खोज करेंगे, अंदर उतनी ही ज्यादा तड़प जरूर हो जाएगी, नाम से ही मुक्ति है। नाम हमें नाम रूप हो चुके सन्तों से ही मिलता है। अगर नाम लफ्ज होता तो गुरु अमर देव जी महाराज जिनकी हमने बानी पढ़ी है, उन्हें बुढ़ापे में गुरु अंगद देव जी महाराज के चरणों में जाकर बारह साल पानी ढोने की और कठिन साधना साधने की क्या जरूरत थी? नाम ताकत है, गुरु नाम के भंडारी बनकर आते हैं, उन्हें परमात्मा की तरफ से परमिशन मिली होती है।

कहे कबीर हम धुर के भेदी, लियाए हुक्म हज़ूरी।

परमात्मा खुद ही उन्हें हुक्म देता है, उनका परमात्मा उनका गुरु होता है। उसकी तालीम पर अमल करके उन्होंने तन, मन, धन हर तरह से कुर्बानी करके उसे खुश कर लिया होता है, अपने अंदर प्रकट किया होता है। ऐसे महात्मा सुनी-सुनाई बात नहीं कहते। दुनियादार और महात्माओं का यही फर्क है कि महात्मा आंखों देखी कहते हैं और हम सुनी हुई बातों का प्रचार करते हैं। महात्मा यह नहीं कहते कि आपकी मुक्ति कोई और करेगा। महाराज जी कहा करते थे कि नाम जिम्मेदारी है।

गुरु अमर देव जी महाराज के कहे मुताबिक जब तक हमें कोई महात्मा नहीं मिलता, सुरत-शब्द का अभ्यास नहीं मिलता तब तक हमें पता नहीं कि हमारे धर्म-ग्रंथ क्या कहते हैं? धर्म-ग्रंथ पढ़ने का फायदा उसी वक्त होता है, जब हमें नाम मिल जाता है फिर हम कोई भी वेद-शास्त्र पढ़ें, हमें उसमें से प्रमाण मिलते हैं कि लिखने वाला सही था।

ग्रंथ और पोथियों में जो रिकॉर्ड है वह उन महात्माओं का अनुभव है जो पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े, परमात्मा के साथ मिलाप किया। उन्होंने जो कुछ अंदर देखा, वह बाहर बयान कर दिया, उन नजारों का जिक्र कर दिया लेकिन वे नजारे बाहर नहीं हैं।

महाजन की बही में पैसों का विवरण है कि किसके नाम कितनी रौकड़ी है लेकिन धन महाजन की तिजोरी में है। इसी तरह धर्म ग्रंथ हमें विवरण देते हैं, अंदर जाने के फायदे बताते हैं, जहां से नाम मिलता है उसके फायदे बताते हैं। अगर पढ़-पढ़ाकर हम घर में बैठे रहें तो क्या फायदा हुआ?

हमें चाहिए कि हम बड़े प्यार से धर्म ग्रंथों को पढ़ें, धर्मग्रंथ जो कहते हैं उसके बारे में सोचें-विचारें फिर उस पर चलें। तभी हमारा पढ़ने-पढ़ाने या सुनने का फायदा है।

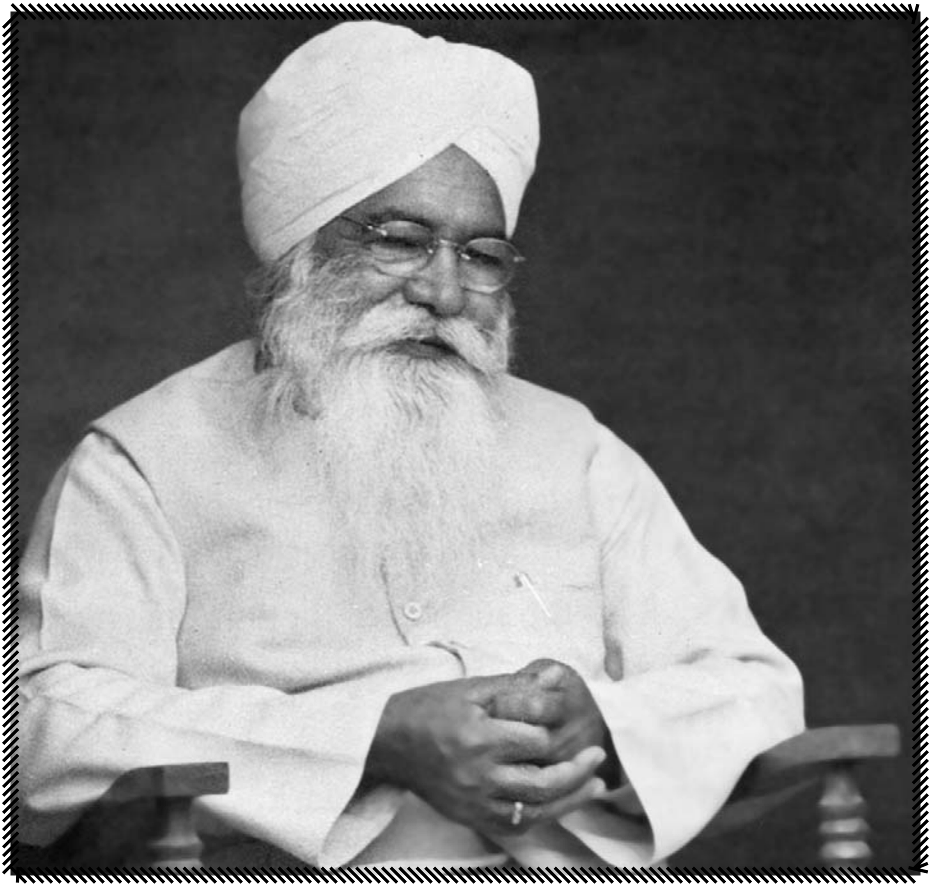

हमें भी चाहिए कि जो कुछ गुरु अमर देव जी महाराज ने प्यार से समझाया है कि भई, नाम मुझे गुरु से मिला। मैं अपने सूरमे गुरु अंगद देव जी का ऋणी हूं और उनका धन्यवाद करता हूं कि उस सूरमे गुरु ने मेरी सुरत को शब्द के साथ जोड़ा।

हमें भी नाम मिल गया है। 'शब्द–नाम' की कमाई करके अपनी आत्मा को पवित्र करें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

परमात्मा एक रोशनी है

मैं बहुत दिशाओं में बहुत से लोगों के पास गया। मैंने बहुत कर्मकांड किए लेकिन मेरे मन को सन्तुष्टि नहीं मिली। हर जगह लोग सिर्फ भगवान की बातें करते और थ्योरी ही समझाते थे जिससे मेरी प्यास और बढ़ गई लेकिन कोई मुझे तजुर्बा नहीं करवा सका। अगर मुझे कहीं से कुछ मिल जाता तो मैं बाबा बिशनदास जी के पास नहीं पहुँच पाता। जब मैंने बाबा बिशनदास जी के चरणों में शीश झुकाया तो मुझे शान्ति मिली, उन्होंने मेरी जिंदगी बनाई और मेरे रास्ते की शुरुआत की।

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास गया, मैंने उनसे कहा, ''मुझे परमात्मा दिखाओ?'' उन्होंने मेरा सिर सूरज की तरफ कर दिया और मुझसे कहा, ''सूरज की तरफ लगातार देखते जाओ और मुझे बताओ कि तुम कितनी देर लगातार सूरज की तरफ देख सकते हो?'' मैं एक पल भी सूरज की तरफ नहीं देख सका और मैंने शर्मिन्दा होकर उनसे कहा, ''मैं ज्यादा देर तक सूरज की तरफ नहीं देख सकता क्योंकि इसकी रोशनी बहुत तेज है।''

बाबा बिशनदास ने कहा, ''**परमात्मा एक रोशनी है।** परमात्मा की रोशनी इस सूरज से हजारों गुना ज्यादा है। हम तो एक सूरज की रोशनी को भी ज्यादा देर तक नहीं देख सकते तो उस परमात्मा की रोशनी को कैसे देख सकेंगे? जब तक हम परमात्मा की रोशनी को देखने वाली आँख नहीं बनाते तब तक हम गुरु को परमात्मा दिखाने के लिए किस तरह कह सकते हैं?''

बाबा बिशनदास ने मुझे बताया, ''हमारी आत्मा का बाहर के रीति-रिवाजों से कोई सम्बंध नहीं होता। अगर पानी के नीचे बैठने से मुक्ति मिलती तो पानी में रहने वाले मेंढक, मछलियों को मुक्ति मिल जाती। आग में बैठने से भी मुक्ति नहीं मिलती क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग तो हमारे अंदर ही है।''

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा तो उस समय मेरे साथ दो और प्रेमी थे। बाबा जी ने हमें खेती का काम करने के लिए कहा। मेरे साथ के दो प्रेमी किसान थे लेकिन मैंने इससे पहले कभी खेती का काम नहीं किया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे जो कहा मैंने वही किया। मेरे साथ वाले प्रेमियों ने सोचा कि खेती का काम तो हमने बहुत बार किया है अब यह करने का क्या फायदा? उन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया।

शाम को बाबा बिशनदास यह देखने के लिए आए कि उन्होंने जो काम हमें दिया था वह हमने ठीक से किया है या नहीं? मैंने बाबा बिशनदास जी से विनती करते हुए कहा, ''मैंने घर पर खेती-बाड़ी का काम नहीं किया। आपके चरणों में आकर आपकी दया से मैं यह काम कर सका हूँ अगर इसमें कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दें।''

उन दोनों प्रेमियों ने बाबा बिशनदास से कोई और काम माँगा कि वे खेती-बाड़ी का काम तो जन्म से ही कर रहे हैं उनकी इस काम में कोई रुचि नहीं। बाबा बिशनदास उनसे खुश नहीं हुए और उन पर दया नहीं की। उन्होंने सिर्फ इस गरीब आत्मा पर ही दया की।

बाबा बिशनदास जी बहुत ही सख्त महात्मा थे। उनका जन्म रियासत नाभा (पंजाब) के एक राजसी खानदान में हुआ था। उनके घर में हर तरह की सहूलियतें थी। मैंने उनके महल और जायदाद भी देखी हैं। उन

दिनों में भारत पर राजा राज्य करते थे। नाभा का राजा हीरासिंह उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

बाबा बिशनदास जी सांसारिक तौर पर बहुत पढ़े–लिखे थे। उस समय भारत में पढ़ाई करना बहुत मुश्किल था। उनको पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा गया। उन्होंने इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उस समय भारत में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना बहुत बड़ी चीज थी। जो इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करके आता, लोग उसकी बहुत इज्जत करते थे, सरकार उसे कमीशनर का पद देती थी। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''पढ़े–लिखे अपने साथ कुछ लेकर नहीं जाते। रूहानियत के रास्ते में अनपढ़, पढ़े–लिखे में कोई फर्क नहीं।''

बाबा बिशनदास जी बहुत आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन उन्होंने मुश्किल जीवन को चुना। उन्होंने अपने जीवन में परमात्मा की खोज के लिए हर तरह के कर्मकांड किए। जब वे बाबा अमोलकदास के पास पहुँचे तो उन्होंने बाबा अमोलकदास से कोई प्रश्न नहीं पूछा। और बाबा अमोलकदास के सामने हाथ जोड़कर कहा, ''गुरु जी, कृप्या मुझे इस नर्क से निकालकर मुक्त कर दें।'' बाबा अमोलकदास अनपढ़ थे यहाँ तक कि वह अपने दस्तखत करना भी नहीं जानते थे।

जब बाबा बिशनदास बाबा अमोलकदास जी के पास पहुँचे तब बाबा अमोलकदास ने उनको बियाबान से कँटीली झाड़ियाँ लाकर ऐसी जगह बाड़ लगाने के लिए कहा जो जगह उनकी अपनी नहीं थी। उस जगह कुछ बोया भी नहीं जा सकता था कि उसे सुरक्षा की कोई जरूरत हो। बाबा बिशनदास डेढ़ महीने तक बाबा अमोलकदास के हुक्म के मुताबिक कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगाते रहे। ऐसा करने के बाद ही बाबा अमोलकदास ने बाबा बिशनदास को पहले 'दो–शब्द' का भेद दिया।

बाबा अमोलकदास ने गुरु नानक देव जी के बेटे श्रीचन्द से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया था। गुरु नानक देव जी खुद भगवान थे। वह इस संसार में लोगों को ज्ञान देने के लिए आए थे। संसार में बहुत लोगों ने उनसे फायदा उठाया लेकिन उनके दोनों बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास ने उनसे 'पाँच-शब्द' का भेद नहीं लिया। लक्ष्मीदास मीट खाता और हर तरह का बुरा काम करता था।

श्रीचन्द ने उदासी मत के अविनाशी मुनि से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया। अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को शरीर पर लंगोट पहनकर नदी किनारे बैठकर तप करने का आदेश दिया। श्रीचन्द ने हर तरह के कर्मकांड किए। श्रीचन्द की गद्दी भारत की एक मशहूर गद्दी हुई है। श्रीचन्द 'दो-शब्द' का भेद देने लगा। उदासी मत के लोग श्रीचन्द को शंकर का अवतार मानते हैं।

गुरु नानक देव जी ने भाई लैहणां को 'नामदान' दिया। भजन-सिमरन में कामयाब होने पर गुरु नानक देव जी ने भाई लैहणां को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। पूर्ण गुरु जानता है कि क्या होने वाला है? गुरु नानक देव जी जानते थे कि उनके चोला छोड़ने के बाद उनके बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास भाई लैहणां को सम्मान नहीं देंगे क्योंकि परिवार और आस-पास के लोग भाई लैहणां को गुरु नानक देव जी के घर का नौकर ही समझते थे।

गुरु नानक देव जी ने चोला छोड़ने से कुछ महीने पहले ही भाई लैहणां को अपने से दूर जाने के लिए कह दिया ताकि उनके बेटे भाई लैहणां को तंग न करें। भाई लैहणां ने अपने गाँव जाकर अपने आपको एक कमरे में बंद करके भजन करना शुरू कर दिया और अपने आपको अंदर से गुरु नानक देव जी के साथ जोड़ लिया।

जब गुरु नानक देव जी ने अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर ली, अपना शरीर छोड़ दिया तब भी उनके बेटे उनके पास नहीं आए, उनकी अर्थी को कंधा नहीं दिया। उनके बेटे उनसे इसलिए नाराज थे कि गुरु नानक देव जी ने उन्हें गद्दी नहीं दी। श्रीचन्द और लक्ष्मीदास कहते कि भाई लैहणां हमारे घर का नौकर है, हम इसे अपना गुरु कैसे मान लें?

भाई लैहणां गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी बन गए लेकिन गुरु नानक देव जी के बेटों ने उन्हें सच्चे गुरु के रूप में स्वीकार नहीं किया। श्रीचन्द ने गुरु नानक देव जी के पंथ के समान्तर ही पंथ शुरू कर दिया और 'दो-शब्द' का भेद देने लगा।

युगों-युगों से ही चला आ रहा है कि कुछ लोग पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को मानते हैं और कुछ नहीं मानते। जिनके भाग्य में लिखा होता है वे ही पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी के पास पहुँचते हैं।

श्रीचन्द ने लम्बा जीवन बिताया। जब वह गुरु रामदास जी से मिला तो उसने उनसे कहा, ''आपने इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है?'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''यह दाढ़ी आप जैसे महापुरुषों के चरण साफ करने के लिए बढ़ाई है।'' गुरु रामदास जी का नम्रता भरा जवाब सुनकर श्रीचन्द रो पड़ा और कहने लगा, ''आपकी इसी नम्रता के कारण हमें गद्दी नहीं मिली, हमारे पास कुछ नहीं बचा।''

बाबा अमोलकदास बहुत अच्छे साधु थे। उन्होंने करीब एक सौ चालीस साल का जीवन बिताया। बाबा अमोलकदास ने बाबा बिशनदास और पटियाला के राजा को ही 'नामदान' दिया। मैं जब बाबा बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा उस समय बाबा अमोलकदास जी चोले में थे।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

08 दिसम्बर 1996 साँपला

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया, नाम का अमृत पिलाया और आत्मा को शान्ति बक्शी। जिस किसी का गुरु से कोई फायदा हुआ हो उसका हृदय प्यार से भर जाना चाहिए। ऐसे सेवक के मुँह से साँस–साँस के साथ गुरु का शुक्राना ही निकलता है लेकिन वह जब तक अंदर जाकर गुरु में मिल नहीं जाता तब तक उसे सब्र नहीं आता। वह दिन–रात तड़पता है कि गुरु ने मेरी आत्मा को वह शान्ति मुफ्त में दी जो मूल्य देने से नहीं मिलती, उसे हम खेतों में नहीं उगा सकते।

हाँ भई, मैं हर ग्रुप में बोलता हूँ कि मजबूत इरादे से मन को जवाब देकर भजन में बैठें अगर आप अभ्यास में मजबूत इरादे से दृढ़ विश्वास से बैठेंगे तो आपका ख्याल पलट जाएगा। दुनियावी काम भी मजबूत इरादे से दृढ़ विश्वास से करेंगे।

चाहे आप यहाँ अभ्यास करते हैं या अपने घरों में आप सबसे पहले जरूरी काम कर लें फिर पाँच पवित्र नामों को धीरे–धीरे दोहरा लें। जब भजन में बैठते हैं तो अपने गुरु को तीसरे तिल पर हाजिर समझकर बैठें। सच्चाई यह है कि गुरु तो हमेशा हाजिर होता है और हमारे इंतजार में होता है लेकिन हम तीसरे तिल पर पहुँचते नहीं। हाँ भई, आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरु करें। ✻✻✻

मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रम

|| 03 से 07 जनवरी 2024 ||

RNI No - RAJHIN/2003/9899
Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Dec. 2023
Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Dec. 2023

सन्त साफ शीशे की तरह प्योर, पवित्र और निर्मल होते हैं जो उनके साथ लगते हैं वे भी निर्मल, प्योर और पवित्र हो जाते हैं। हम जैसी भावना लेकर जाते हैं वे हमें वैसे ही नजर आते हैं।